

नज़ी संपत्तिके अधगिरहण पर सीमा

प्रलिमिस के लयि:

[अनुच्छेद 39\(b\)](#) और [31C](#), [अनुच्छेद 300A](#), आर्थिक लोकतंत्र, समाजवाद, मूल अधिकार, जमींदारी प्रथा, संपत्तिका अधिकार, नौवीं अनुसूची, [अनुच्छेद 31A](#) और [31B](#), रैयतवाड़ी, नीतिनिरिदेशक सिद्धांत, [अनुच्छेद 14](#) और [19](#), प्रथम संशोधन अधिनियम, 1951, [अनुच्छेद 368](#), [संविधान संशोधन, संसद](#)।

मेन्स के लयि:

स्वतंत्रता के बाद से संपत्तिके अधिकार का विकास। संपत्तिके अधिकार को आकार देने में न्यायपालिका की भूमिका।

स्रोत: हदुस्तान टाइम्स

चर्चा में क्यों?

हाल ही में प्रॉपर्टी ऑनर्स एसोसिएशन बनाम महाराष्ट्र राज्य मामले, 2024 में सर्वोच्च न्यायालय ने सार्वजनिक वितरण हेतु नज़ी स्वामित्व वाले संसाधनों को अपने अधीन लेने की सरकार की शक्ति पर सीमाएँ नरिधारति की हैं।

- याचिकाकर्त्ताओं ने तर्क दिया कि संविधान के [अनुच्छेद 39\(b\)](#) और [31C](#) की संवैधानिक योजनाओं को आधार बनाकर राज्य द्वारा नज़ी संपत्तियों पर कब्जा नहीं किया जा सकता है।

नोट:

- [अनुच्छेद 39\(b\)](#) में प्रावधान है कि राज्य का लक्ष्य सभी के हति में भौतिक संसाधनों का वितरण सुनिश्चित करना होना चाहिये।
- [अनुच्छेद 31C](#) के अनुसार, [अनुच्छेद 39\(b\)](#) और [39\(C\)](#) को समानता के अधिकार ([अनुच्छेद 14](#)) या [अनुच्छेद 19](#) के तहत अधिकारों (अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शांतिपूर्वक एकत्र होने का अधिकार आदि) का हवाला देकर चुनौती नहीं दी जा सकती है।

सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के मुख्य नषिकर्ष क्या हैं?

- नज़ी संसाधनों का अधगिरहण:** जो संसाधन दुर्लभ हैं या सामुदायिक कल्याण के लयि महत्त्वपूर्ण हैं, उन्हें राज्य अधगिरहण के लयि योग्य माना जाना चाहिये, न कि सभी नज़ी संपत्तियों को।
 - "सार्वजनिक ट्रस्ट सिद्धांत" (जहाँ राज्य द्वारा जनता के लयि कुछ संसाधनों को ट्रस्ट में रखा जाता है) सेइस नरिधारण का मार्गदर्शन हो सकता है।
- संसाधन योग्यता के लयि परीक्षण:** न्यायालय ने दो प्रमुख परीक्षण नरिधारति कयि हैं अर्थात संसाधन "भौतिक" और "समुदाय से संबंधति या उसका कल्याण करने वाले या दोनों होने चाहिये।
 - नज़ी स्वामित्व वाले संसाधन और उसके सामुदायिक तत्त्व की भौतिकता का मूल्यांकन वषियगत आधार पर कयि जाना चाहिये।
 - भौतिकता से तात्पर्य भूमि, खनजि या जल जैसी परसंपत्तियों के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय गतशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव से है।
- रंगनाथ रेड्डी मामले, 1977 के वषिरीत नरिणय:** बहुमत द्वारा [\[1977\] 2 SCR 1013](#), 1982 [\[1982\] 2 SCR 1013](#) पलट दिया गया, जसिमें [\[1977\] 2 SCR 1013](#), 1977 में दएि गए तर्क को बरकरार रखा गया था कि सभी नज़ी संपत्तियों को पुनर्वितरण हेतु "समुदाय के भौतिक संसाधन" माना जा सकता है।
 - एकमात्र असहमति जताने वाले न्यायमूर्त सिद्धांशु धूलिया ने समुदाय के "भौतिक संसाधनों" को परभाषति करने में व्यापक वधायी वविकाधिकार की वकालत की।

- अनुच्छेद 39(b) पर प्रतर्बिंध: न्यायालय ने अनुच्छेद 39(b) की व्यापक व्याख्या के प्रतर्बिंध कथित किया, जिससे अनुच्छेद 300A के तहत संपत्तिकाे अधिकार पर प्रतर्बिंध प्रभाव होगा।
 - अनुच्छेद 300A: किसी भी व्यक्तिकाे कानून के प्राधिकार के बिना उसकी संपत्तिकाे वंचित नहीं किया जाएगा।
- नजिकाे संसाधनकाे सामुदायिकाे संसाधनकाे बदलना: सर्वोच्च न्यायालय ने नजिकाे संसाधनकाे सामुदायिकाे भौतिकाे संसाधनकाे बदलने के पाँच तरीके बताए हैं:
 - राष्ट्रीयकरण, अधगिरहण, वधिकाे कर्षान्वयन, राज्य द्वारा खरीद और संपत्तिकाे मालिकाे द्वारा दान।

संपत्तिकाे अधिकार से संबधति संवैधानिकाे प्रावधान क्या हैं?

- अनुच्छेद 31: अनुच्छेद 31 (एक मूल अधिकार) संपत्तिकाे अधिकार से संबधति था, लेकिन इसे नरिसूत कर दिया गया (44वें संशोधन अधनियम, 1978) और अनुच्छेद 300A (संवैधानिकाे अधिकार) द्वारा प्रतर्बिंध कथित किया गया।
 - प्रथम संशोधन अधनियम, 1951: प्रथम संशोधन अधनियम, 1951 द्वारा संवैधानिक में अनुच्छेद 31A और 31B के साथ -साथ नौवीं अनुसूचा भी शामिल की गई।
 - अनुच्छेद 31A: इसने राज्य को मूल अधिकारकाे के साथ असंगतिकाे आधार पर चुनौती दयि बना संपत्तिकाे अर्जति करने या संपत्तिकाे में अधिकार में परिवर्तन की शक्तिकाे प्रदान की।
 - अनुच्छेद 31B: यह सुनिश्चित करता है कि नौवीं अनुसूचा में शामिल कानूनकाे को रद्द नहीं किया जा सकेगा, भले ही वे मूल अधिकारकाे के वरिद्ध हों।
 - नौवीं अनुसूचा: इसमें केंद्रीय और राज्य कानूनकाे की सूचा शामिल है जनिहें न्यायालयकाे में चुनौती नहीं दी जा सकती। जैसेभूमिकाे सुधार कानून।
- 25वां संशोधन अधनियम, 1971: इसने अनुच्छेद 39(B) एवं (C) के तहत संसाधन वरिण के उद्देश्य से राज्य के कानूनकाे को संवैधानिकाे चुनौतिकाे से बचाने के लयि अनुच्छेद 31C जोड़ा गया।
 - संशोधन ने अदालतकाे को राज्य के कार्याकाे की समीक्षा करने से रोक दिया, भले ही वे मनमाने या तर्कहीन हों।
- 42वां संशोधन अधनियम, 1976: इसने सभी नरिदेशक तत्त्वकाे को शामिल करने के लयि अनुच्छेद 31C के दायरे का वरिण कथित।
 - यह प्रावधान योग्य कानूनकाे को अनुच्छेद 14 एवं 19 के तहत नरिसूत होने से बचाता है यदयि वास्तव में संसाधन पुनर्वरिण के माध्यम से सार्वजनिकाे कल्याण सुनिश्चित करते हैं।
- 44वां संशोधन अधनियम, 1978: अनुच्छेद 19(1)(f) और अनुच्छेद 31, जो संपत्तिकाे अर्जति एवं धारण करने के साथ-साथ नरिणन करने के अधिकार की रक्षा करते थे, को नरिसूत कर दिया गया, जिसका अर्थ है कि इसने संपत्तिकाे अधिकार को मूल अधिकारकाे की सूचा से हटा दिया।
 - भाग XII के अध्याय IV में अनुच्छेद 300A के अंतर्गत संपत्तिकाे एक संवैधानिकाे अधिकार के रूप में स्थापति हुआ।

संपत्तिकाे अधिकार से संबधति न्यायिकाे व्याख्या क्या है?

- 1951: सर्वोच्च न्यायालय ने प्रथम संशोधन अधनियम, 1951 को बरकरार रखा, जिसमें अनुच्छेद 368 के तहत संवैधानिक में संशोधन करने के लयि संसदीय वरिषाधिकार की पुष्टिकाे की गई और साथ ही यह नरिणय दिया गया कि मौलिकाे अधिकारकाे को प्रभावति करने वाले संशोधन अनुच्छेद 13(2) द्वारा प्रतर्बिंधति नहीं हैं।
 - अनुच्छेद 13(2) न्यायिकाे समीक्षा का प्रावधान करता है जो मौलिकाे अधिकारकाे के साथ टकराव करने वाले कानूनकाे को अमान्य घोषति करने में सहायता प्रदान करता है।
- 1954: सर्वोच्च न्यायालय ने नरिणय दिया कि अनवरिण संपत्तिकाे अधगिरहण के मामलाे में सरकार को उचित मुआवजा प्रदान करना आवश्यक है।
- 1973: सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट कथित कि संवैधानिकाे संशोधन अनुच्छेद 13(2) के प्रतर्बिंधकाे के अधीन नहीं है, जिसका अर्थ है कि संसद, संवैधानिक में संशोधन कर सकती है, जिसमें संपत्तिकाे अधिकार से संबधति प्रावधानकाे में परिवर्तन करना या समाप्त करना शामिल है।
- 1980: सभी नरिदेशक सदिधांतकाे को शामिल करने के लयि अनुच्छेद 31C के दायरे का वरिण करने का सर्वोच्च न्यायालय द्वारा खारजि कर दिया गया।
- सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 31C की न्यायिकाे जाँच को रोकने वाले प्रावधानकाे को भी नरिसूत कर दिया, परिणामस्वरूप संवैधानिकाे जाँच और संतुलन के सदिधांत को बल मलित।
- 1981: यह माना गया कि केशवानंद भारती मामलाे से पहले नौवीं अनुसूचा में संवैधानिकाे संशोधन और कानून न्यायिकाे चुनौती से संरक्षति हैं।
 - हालाँकि, इन मामलाे के बाद जोड़े गए संशोधन मूल संरचना सदिधांत के आधार पर न्यायिकाे समीक्षा के अधीन हैं।
- 2020: सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि बिना उचित प्रक्रयिकाे के किसी व्यक्तिकाे की नजिकाे संपत्तिकाे को जबरन बेदखल करना मानवाधिकारकाे और अनुच्छेद 300A के तहत संवैधानिकाे अधिकार दोनकाे का उल्लंघन है।

सर्वोच्च न्यायालय के नरिणय का महत्त्व क्या है?

- राज्य एवं व्यक्तगित अधिकार: यह राज्य के हस्तक्षेप की संभावना को संरक्षति करता है, जबकि यह स्वीकार करता है कि नजिकाे संसाधनकाे का अंधाधुंध अधगिरहण स्वीकार्य नहीं है।

- **आर्थिक लोकतंत्र:** यह नरिणय डॉ.बी.आर.अंबेडकर के "आर्थिक लोकतंत्र" के दृष्टिकोण के अनुरूप है, जो यह सुनिश्चित करता है कि संविधान एक कठोर आर्थिक संरचना को नरिदेशति नहीं करता है, इस प्रकार लोगों की अपने सामाजिक एवं आर्थिक संगठन का नरिणय लेने की स्वतंत्रता को संरक्षति करता है।
- **लचीली/नम्य व्याख्या:** इसमें इस बात पर बल दिया गया है कि अनुच्छेद 39(B) जैसे नरिदेशक सदिधांतों को इस तरह से करयान्वति किया जाना चाहिये जो वकिसशील सामाजिक और आर्थिक वास्तवकिताओं को प्रतबिबिति करे, न कि किसी एक कठोर आर्थिक सदिधांत को।
- **वधियाी ढाँचा:** यह नरिणय आर्थिक और कल्याणकारी नीतियों को आकार देने में नरिवाचति सरकारों और लोकतांत्रिक प्रकरया की भूमिका को पुष्ट करता है।
- **कल्याण:** भवषिय की कल्याणकारी नीतियाँ संभवतः सार्वजनिक कल्याण के लिये आवश्यक दुर्लभ, महत्त्वपूर्ण संसाधनों पर केंद्रति होंगी। राज्य प्रगतशील कराधान और सार्वजनिक योजनाओं जैसी अधिक लक्षति कल्याणकारी रणनीतियाँ अपना सकता है।

संपत्ति पर राज्य के नरियंत्रण का प्रभाव क्या है?

- **सकारात्मक प्रभाव:**
 - **न्यायसंगत पुनर्रवतिरण:** हाशिए पर पड़े समूहों में संसाधनों का पुनर्रवतिरण करके सामाजिक न्याय को बढ़ावा देता है तथा धन असमानता को कम करता है।
 - **संसाधन प्रबंधन:** यह सुनिश्चित करता है कि भूमि, जल और खनजि जैसे संसाधनों का उपयोग स्थायी रूप से और सार्वजनिक लाभ के लिये किया जाए।
 - **लोक कल्याण संबंधी परियोजनाएँ:** सार्वजनिक उद्देश्यों के लिये भूमि या संपत्ति का अधगिरहण करके बुनियादी ढाँचे के वकिस, सवास्थ्य देखभाल और शकिस की सुवधि प्रदान करती हैं।
 - **कमज़ोर समूहों की सुरक्षा:** वंचति समुदायों को शोषण से सुरक्षा प्रदान करता है।
- **नकारात्मक प्रभाव:**
 - **नजिी स्वामतिव पर सीमाएँ:** व्यक्तगित संपत्ति अधिकारों को कम करती है, जिससे नजिी नविश एवं उद्यमशीलता को हतोत्साहति होने की संभावना होती है।
 - **प्रोत्साहन में कमी:** राज्य के प्रतबिंधों के कारण नजिी मालकों में संपत्ति में सुधार या नविश करने हेतु प्रोत्साहन में कमी हो सकती है।
 - **आर्थिक स्थरिता:** अत्यधिक वनियमन या अत्यधिक नरियंत्रण बाज़ार-संचालति वकिस एवं नवाचार को बाधति कर सकता है।

नषिकर्ष

2024 के नरिणय ने नजिी संपत्ति के अधगिरहण के लिये राज्य की शक्ति के बारे में महत्त्वपूर्ण मसाल कायम की है। यह सार्वजनिक उद्देश्य, मुआवज़ा और मामले-दर-मामले आकलन की आवश्यकता पर बल प्रदान करता है, और साथ ही व्यक्तगित संपत्ति अधिकारों को सामान्य हति के साथ संतुलति भी करता है।

दृष्टि मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: वभिनिन ऐतहिसकि मामलों में संपत्ति के अधिकार की न्यायकि व्याख्या पर चर्चा कीजिये।

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs)

2021

प्र. भारत में संपत्ति के अधिकार की क्या स्थति है? (2021)

- केवल नागरकों के लिये उपलब्ध वधिकि अधिकार
- किसी भी व्यक्ता के लिये उपलब्ध वधिकि अधिकार
- केवल नागरकों के लिये उपलब्ध मौलिक अधिकार
- न तो मौलिक अधिकार और न ही कानूनी अधिकार

उत्तर: (b)

2016

प्रश्न. कोहलिो केस में क्या अभनिरिधारति किया गया था? इस संदर्भ में क्या आप कह सकते हैं कि न्यायकि पुनर्रवलोकन संविधान के बुनियादी अभलिकषणों में प्रमुख महत्त्व का है? (2016)

प्रश्न: कृषि विकास में भूमिसुधारों की भूमिका पर चर्चा कीजिये। भारत में भूमिसुधारों की सफलता के लिये उत्तरदायी कारकों की पहचान कीजिये। (2016)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/limit-on-private-property-acquisition>

